उन्यिङ-आरान : दक्षता एवं कौशल प्रदर्शन का आदी पर्व

नानू ताली

आदी जनजाति का सियांग से गहरा लगाव और जुड़ाव है। सियाङ नदी कई जिलों में फैली हुई है और इसमें शामिल सहोदर नदियों की अपनी अलग ही कहानी है जो सियांग में मिलती हैं और सियांग की ही हो जाती हैं। आदी जिलों में ईस्ट सियाङ, अपर सियाङ, सियाङ, लोवर दिबाङ वैली, सियोमी आदि जिले प्रमुख हैं। आदी समुदाय पारंपरिक जीवन जीते हुए अपने पुरखा साहित्य को आज भी जीवित रखे हुए हैं। इस जनजाति की असल खासियत इनकी सांस्कृतिक मान्यताएँ, रूढ़िगत परंपरा, लोक-विश्वास, पर्व-त्यौहार इत्यादि है। यह आदी जनजाति की पहचान का परिचायक हैं, जिसे आदी लोगों ने ज़मीनी तौर पर जीते हुए अपनी स्मृति में संजोए रखा है। यह सच है कि समय तेजी से करवट बदल चुका है। शिक्षा की पहुँच और उसके माध्यम से आए सोच और जीवन-स्तर में बदलाव के कारण सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों तरह की चीजें बेशुमार बढ़ चुकी हैं। आधुनिकीकरण ने बहुत कुछ सिखाया है तो बेशक कई अनपेक्षित चीजों को भी पैदा किया है, जिसके नुकसान दीर्घकालिक हैं। आज आदी जनजाति की किशोरवय पीढ़ी अपनी मूल संस्कृति से लगभग कट चुकी है, या उनमें अपनी मातृभाषा को लेकर लगाववृत्ति बेहद कम हो चली है। ऐसे में भाषा के संकटग्रस्त होने की चुनौती सामने है जिससे बच पाने का उपाय नहीं दिख रहा है। अरुणाचल प्रदेश में आदी जनजाति की संख्या यहाँ के अन्य जनजातियों की तुलना में कम नहीं है, लेकिन नई पीढ़ी की जीवन शैली में होता तीव्र बदलाव, रहवास के बदल रहे तौर-तरीके, अत्यधिक सुविधाओं से घिरा जीवन इत्यादि सांस्कृतिक पहचान के लिए खतरे पैदा करते जा रहे हैं। आधुनिक शिक्षा में मातृभाषा के लिए जगह लगातार कम हो रही है या कि उनका व्यावहारिक उपयोग इतना घट चुका है कि वे कुल सरकारी प्रोत्साहन के बाद भी अपनी भाषा से ठीक-ठीक नहीं जुड़ पा रहे हैं। अरुणाचल प्रदेश में आदी जनजाति की कुल 14 उप-जनजातियाँ हैं। कुछ तो तादाद में दो सौ या ढाई सौ के करीब ही बची हुई हैं। ऐसी स्थिति में आधुनिक बदलाव डराते अधिक हैं। इन बदलावों ने उन्हें ऐसे दोराहे पर ला खड़ा किया है, जिसमें एकदम से पीछे लौट सकना मुश्किल काम है। इस कठिन घड़ी में आदी जनजाति अपनी वाचिक भाषा और उसमें शामिल आख्यानों अथवा लोक साहित्य के विविध रूपों को बचाने में जुटी है।

आख्यान की परंपरा और उन्यिङ-आरान की आनुष्ठानिक विधि :

आख्यानात्मक शैली आदी जनजाति की ज्ञान-परंपरा का वाचिक कोठार है, जिसमें ज्ञान की उपस्थिति किताबी कम, अनुभवजन्य अधिक है। यह ज्ञान मौलिक चिंतन और लोकमान्य रूपों का अभिलेखागार है जो प्रमुखता से कही और सुनी जाती हैं। गौरतलब है कि अरुणाचल प्रदेश में सभी जनजातियों की अपनी लिपि नहीं होने के कारण बहुसंख्य जनजातियाँ लोकस्मृति में जीतीं हैं या फिर पुरखों के अनुदेशित आचरणों, मान्यताओं, विधि-विधानों, अनुष्ठानों आदि के अनुरूप सामाजिक व्यवहार करती हैं। समग्रता में देखें, तो भारतीय इतिहास में आख्यान की इतिवृत्तात्मकता को भाषा में विशिष्ट महत्त्व प्राप्त है। उन्यिङ-आरान में भी ये तत्त्व प्रमुखता से विद्यमान दिखाई देते हैं। इस त्यौहार के माध्यम से आदी जनजाति अपने आदिवासी और

प्रकृतिजीवी होने का प्रमाण देता है। आदी जनजाति इस ओर उम्मीद की आँख से देखती है और नई पीढ़ी को इन त्योहारों से जोड़ने में जुटी है।

'उन्यिङ-आरान' आदी जनजाति में मनाया जाने वाला वर्ष का शुरुआती त्यौहार है। आदी लोग यश और प्रतिष्ठा प्राप्त करने की लालसा में इसे मनाते हैं। साथ ही उन्यिङ-आरान को आदी लोग नव वर्ष के आगमन तथा ऋतुओं के स्वागत-अभिनंदन के लिहाज से भी मनाते हैं। उन्यिङ-आरान को प्रतिष्ठा का त्यौहार इसलिए भी कहा जाता है कि इन अवसरों पर गाँव में केवल वे लोग ही मिथुन त्यागते हैं जिनके पास गाँव वालों को खिलाने-पिलाने का सामर्थ्य होता है। त्यौहार के अवसर पर मिथुन त्यागने तथा प्रधान घर होने की पुष्टि अपने इच्छानुसार होता है। इसी दौरान त्यौहार की सभी प्रक्रियाओं को गाँव वाले मिलकर निभाते हैं। इस तरह व्यक्तिगत प्रतिष्ठा, सामर्थ्य तथा यश स्थापना वाला त्यौहार एक सार्वजनिक उत्सव में बदल जाता है। पारंपरिक महत्त्व की दृष्टि से देखें तो, उन्यिङ आरान त्यौहार आदी जनजाति के कला, स्थापत्य, साहित्य, शिल्प, कौशल, अनुभव, जानकारी, कल्पना, स्वप्न इत्यादि को प्रदर्शित करने का सुअवसर प्रदान करता है। वास्तव में आदी जनजाति के सभी त्यौहार इस जनजाति के सांस्कृतिक पहचान के स्तंभ हैं तथा इनकी आनुष्ठानिक विधि-विधान एवं गतिविधियाँ विशेष महत्त्व रखती हैं। आदी जनजाति वर्ष भर में कई त्यौहार मनाते हैं। इन छोटे-बड़े त्योहारों के लिए खास समय या ऋतु निर्धारित है। आदी जनजाति के त्यौहार कृषि प्रधान यानी कृषि आधारित अधिक हैं, जो मुख्यतः ऋतु-चक्र के हिसाब से मनाए जाते हैं। साल के शुरुआत में उन्यिङ-आरान का क्रम सबसे पहले आता है, फिर एतोर, सोलुङ, यागेङ,पिनेङ, दोरूङ आदि मनाए जाते हैं। यद्यपि, वर्तमान समय में सोलुङ सबसे बड़े त्यौहार के रूप में आदी जनजाति द्वारा मनाया जाता है, जिसे आदी जनजाति महोत्सव की तरह आयोजित करते हैं तथा अपने आप को इसमें स्वतः स्फूर्त सहभागी बनाते हैं। परंतु आदी-मिन्योङ द्वारा सबसे लोक मान्य त्यौहार उन्यिङ-आरान है।

उन्यिङ-आरान के आरंभ होने के दिनों में जंगलों से मिथुनों को ढूंढ़कर लाया जाता है, जिसमें लगभग 15-16 या फिर इससे ज्यादा दिन लग सकते हैं। मिथुनों को जंगल से लाकर 'होइत्त' पर बाँधा जाता है। मिथुनों को कर्मकाण्डी तौर से होटकाङ पर लटका कर बलि दिए जाने तक उनका विशेष खयाल रखा जाता है। 'होइःत्त/सोतिःत्त' गाँव वालों द्वारा बनाया गया एक प्रकार से पैरों का समूह है जिसे केवल मिथुनों को बांधने तथा 'एःतौर/लूतौर' गीःदीः यानी त्यौहार के दौरान इस पर क्रिया-अनुष्ठानों का पालन करने के लिए बनाया जाता है। इन मिथुनों को जंगल से प्राप्त करना आसान नहीं होता है। मिथुनों को जंगलो से एक ही 'कुमादङ' के लोग साथ मिलकर ढूँढ़कर लाते हैं। 'कुमादङ' उसे कहते हैं जिसमें एक तरह के उपनाम के लोग या एक ही जाति के लोग मिलकर रहते हैं। उन लोगों का मामला है कि वे एक ही खून से जन्में होते हैं। ये आपसी रिश्तों में भाई-बहन, चाचा-बुआ, तथा भांजा-भांजी होते हैं, जिनके बीच पीढ़ी दर पीढ़ी कभी भी शादी के बंधन नहीं होते। वे इस रिश्ते पर पूरी तरह विश्वास करते हैं। इसी तरह 'उन्यिङ'-आरान त्यौहार में अगर कोई 'सिराम' उपनाम या जाति के एक घर में मिथुन त्यागने लगे तो इस घर को 'जामोह गाओ' और सिराम' उपनाम के लोगों द्वारा ही सामूहिक ढंग से सहायता दी जाती है। मगर ये सहायता केवल शारीरिक रूप से होती है। इन सारी व्यवस्थाओं का प्रबंध 'आगाम' घर द्वारा ही किया जाता है। इसी तरह एक ही उपनाम के लोगों को 'कुमदाङ' भी कहते हैं। यद्यपि 'सोसायटी' अंग्रेजी शब्द है, लेकिन लोगों के बीच इसका प्रचलन देखने को मिलता है।

मिथुनों को जंगल से एकत्रित करने के बाद उन्यिङ-आरान के सर्वप्रथम महत्त्वपूर्ण शुरुआती पर्व उन्यि:ङ-आरान-गे:ता (community-hunting) का होता है, जो दो दिनों तक चलता है। इसी बीच यह भी तय होता है कि कुमदाङ के अन्य पुरुष सदस्यों द्वारा जंगलों से सुंदर और सुडौल लकड़ियों को होत्काङ के लिए एकत्रित किया जाए। उन्यि:ङ-आरान-गे:ता के आखिरी दो दिन की शाम सभी पुरूषों को दोगिन-युमा (eve of the night) तक गाँव लौटना होता है, जिसमें उन्हें अपने बच्चों के गले में अपने शिकार के दौरान मिली चीजों को माला बनाकर पहनाना होता है। सभी बच्चे उन मालाओं को अपने दोस्तों के साथ पहनकर बड़ा गर्वानुभव करते हैं। दोगिन-युमा की रात को दे:रै:-गेहाङ (community-feast at community hall) का सर्वप्रथम शुरुआती पर्व किया जाता है, जिसमें आगाम-ए:कुम द्वारा लोगों के लिए आमा-आपोङ (rice-wine) ले जाया जाता है। इस रात के अगले ही दिन मिथुन त्यागने के लिए कुमदाङ द्वारा होत्काङ बनाया जाता। है। इसी दिन ए-बोर-बोरने-युमा के लिए तैयारियाँ शुरू करना होता है। रात भर जागकर ए:बोर-आपोङ बनाने के बाद अगले ही दिन मिथुन त्यागने के प्रात:काल, आगाम-ए:कुम द्वारा गाँव के प्रत्येक घर पर जाकर माहेप: और आपोङ (rice-wine) लेने के लिए बुला लिया जाता है। इसी तरह उन्यि:ङ-आरान के मुख्य दिन का आरंभ मिल बांटकर खाने-पीने से होता है।

न्यिङ-आरान की लोक-प्रसिद्ध कथा

उन्यिङ-आरान 'कीनेः देने' यानी पाताल लोक की देवी द्वारा प्रदान किया गया त्यौहार है। 'पोदी बार्बी/पोदी पितओ' यानी उन्यिङ-आरान की देवी सर्वप्रथम इःयां-इःगाम लोक में रहने के लिए जाती हैं। वहाँ एक व्यक्ति जो तातू ताली नाम का था उन्होंने 'पोदी बार्बी' के खान-पान के लिए फलों की व्यवस्था की; क्योंकि वहाँ केवल फलों से ही उन्यिङ-आरान मनाया जाता था। वहां न धान थे, न ही मिथुन थे। इस कारण 'पोदी बार्बी' इःयी इःगाम लोक को छोड़ मानव-लोक लौट आती हैं। यहाँ वह 'पादाम' लोगों के यहाँ जाती हैं। वहाँ जाने के बाद उन्होंने देखा कि पादाम लोगों में एक ही उपनाम के लोगों के बीच शादियाँ होती हैं। यह 'पोदी बार्बी' के लिए स्वीकार्य नहीं था। इसी कारण वह वहाँ से भी निराश और खिन्न होकर चली गयीं। वह न्यीशी- तागिन क्षेत्र में चली जाती हैं। वहाँ जाने पर उन्हें शकरकंद खाने के लिए दिया जाता है। इस प्रस्ताव से भी 'पोदी बार्बी' को निराशा हुई और वह वहाँ से असंतुष्ट होकर 'गालो' लोगों के यहाँ चली गयीं। वहाँ उन्हें मिथुनों के स्थान पर गाय और बकरियाँ खाने में भेंट की गईं। आखिर वह यहाँ से भी क्षुब्ध होकर 'आदी-मिन्योङ' लोगों के यहाँ लौट आती हैं। यहाँ मिथुन और धान से उन्यि:ङ मनाया जाने लगा। यहाँ आकर 'पोदी बार्बी' को किसी भी प्रकार की कमी महसूस नहीं हुई। वे यहाँ सभी तरह से संतुष्ट होती हैं और वे यहीं पर हमेशा रहने का निर्णय ले लेती हैं। इस प्रकार वह हमेशा के लिए आदी-मिन्योङ भूमि पर बस गईं और बाद में आदी लोगों के लिए आराध्य हो गईं।

ए:बोर यानी बोरन

ए:बोर को सामान्य अर्थों में समझा जाए तो यह एक टोकरी जैसी आकार की सामग्री होती है, जो आकार में बहुत ही बड़ी होती है। इसे केवल बड़े-बड़े त्योहारों के अवसरों के लिए खासतौर पर बनाया जाता है। इसे पुरुषों द्वारा बांस से बनाया जाता है। आदी जनजाति में ए:बोर से छोटे आकार जिसमें आपोङ यानी स्थानीय शराब को ठोस पदार्थ से तरल पदार्थ में परिवर्तित किया जाता है, उसे 'ओलाक' कहते है। ये 'ए:बोर-

बोरनः' से छोटे आकार का होता है। यह भी बाँस से बना होता है। ओलाक से छोटे आकार को तोनसुक/तोनहुक कहा जाता है। यह भी बड़े किस्म के आकार वाले बाँस से बना होता है जिसे 'ए:पो' कहते हैं। इसका इस्तेमाल किसी भी समय आपोङ बनाने के लिए किया जाता है। उसी तरह उन्यिःङ-आरान की शुरुआती रात, जिसमें ये सब प्रक्रियाएँ होती हैं, उसे 'ए:बोर' तथा 'बोरनेः युमा' कहा जाता है। इससे बने आपोङ यानी स्थानीय वाइन को 'ए:बोर आपोङ' या 'बोरनेः आपोङ' कहा जाता है। इसे बनाने की रात तथा अवसर पर औरतें समूहों में रहकर बनाती हैं। इसको बनाने में लगभग 11-12 घंटे का समय लग जाता है। पुरूष लोग केवल रात को माहौल बनाने के लिए आते हैं। औरतें सबसे पहले ए:बोर में आपोङ यानी ठोस आपोङ को डालकर भर देती हैं, जिसके चारो ओर एक्काम पत्ता ढका होता है। उसके बाद पानी को उबाल कर ए:बोर के ऊपरी हिस्से से उबले पानी को बड़ी सावधानी के साथ संभाल कर डाला जाता है।

यह जानना रोचक होगा कि जिस प्रकार एक गर्भवती स्त्री का शिशु जन्म के समय विशेष ख़याल रखा जाता है, उसी प्रकार ए:बोर बनाते समय भी ए:बोर का विशेष ध्यान रखना होता है। यह माना जाता है कि ए:बोर बनने के अवसर पर सभी उन्यिःङ-आरान के देवी-देवतागण मौजूद रहते हैं। वे सभी ए:बोर आपोङ के बनने की प्रतीक्षा कर रहे होते हैं।

यह भी माना जाता है कि उन्यिःङ-आराङ की सफलता 'एबोर रात' के सुखद होने पर अधिक निर्भर करती है। इसीलिए ए:बोर बनने के बाद इसे लोकल तरापोलिन से चारो ओर से लपेट कर ढक दिया जाता है। इस स्थान पर घर के किसी एक सदस्य को ही अंदर जाने या इसके आस-पास रहने की इजाजत होती है। कोई पुरूष वहां अगर जाए तो भी उसे चूहा या गिलहरी लेकर जाना होता है। इसी तरह ए:बोर आपोङ के मान-सम्मान का पूरा ख्याल रखा जाता है। लोगों का कहना है कि ढँके हुए ए:बोर को अगले पाँच दिन बाद जब खोलने जाया जाता है, तब ए:बोर के ऊपरी भाग में सामूहिक शिकार के दौरान मारे जाने वाले जानवरों के पैरों के निशान आ गए होते हैं। पैरों के निशान यह संकेत करते हैं कि कौन से जानवर किन-किन शिकारी द्वारा मारे जाने वाले हैं। ए:बोर के पाँच दिन बाद जब गाँव के पुरूष शिकार के लिए जा रहे होते हैं, तब ए:बोर में बंधे गिलहरियों को आगाम ए:कुम यानी आगाम अमुक के पिता द्वारा शिकारी साथियों को खिलाने के लिए साथ ले लिया जाता है। इस सामुहिक शिकार की शैली को 'कीरूक' कहा जाता है। इस तरह ए:बोर-बोरनेः केवल ऊन्यिङ-आरान त्यौहार में ही नहीं बल्कि आदी जनजाति के प्रत्येक पर्व-त्योहारों में या बड़े-बड़े अवसरों, सामूहिक प्रयोजनों, घर बनाने के मौकों आदि पर विशेष रूप से मनाया जाता है। मान्य है कि बुमहोङ-पेत्त:उम पर्व की तैयारी खास तौर पर आने वाले ए:तौर/लूतौर गी:दी: (Etor festival) को ध्यान में रखकर की जाती है। इसी तरह उन्यि:ङ-आरान त्यौहार केवल एक-दो दिन में मनाए जाने वाला त्यौहार नहीं, बल्कि इसे मनाने के लिए दो महीने से अधिक समय लगते हैं। यह एक ऐसा त्यौहार है, जिसे संपूर्ण और सफल बनाने के लिए कई सारे महत्त्वपूर्ण चरणों में पूर्ण कर सभी गाँव वालों को पूरा करना होता है।

निष्कर्षतः 'उन्यिःङ आरान' को आदी इलाके में हर साल बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। हालाँकि आदी के अन्य क्षेत्रों में भी उन्यिःङ आरान को मनाते हैं मगर वहां इस तरह से सार्वजनिक आयोजन या व्यवस्थाएँ देखने को नहीं मिलती हैं। आदी, पादाम तथा पासीघाट वाले क्षेत्रों में 'उन्यिङ-आरान' के अवसरों पर केवल शिकार किया जाता है और प्रत्येक घरों में जाकर 'याकजोङ सोदुङ' यानी 'याकजोङ पोनुङ' का नृत्य स्थानीय

युवक-युवतियों के समूह द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। फिर भी इस त्यौहार को मनाने का उद्देश्य एवं विश्वास प्रत्येक क्षेत्रों में एक-सा होता है। इस त्यौहार के दौरान ढेर सारी वस्तुओं का प्रयोग दस्तकारी और हस्तशिल्प के रूप में किया जाता है, जो पारंपरिक जीवन शैली और सांस्कृतिक मूल्य का दर्पण और पुरखाई प्रतीक भी मालूम होता है। 'उन्यिङ-आरान' को आदी जनसमाज जिस विधि-विधान और पारंपरिक अनुष्ठान द्वारा मानते हैं, वह असल में एक लंबी अवधि की गहन अनुभूति और पावन उद्गार से जुड़ी सांस्कृतिक प्रक्रिया है, जिसमें हम जितना गहरा उतरेंगे, उतनी ही नई-नई मान्यताओं और लोक-विश्वासों से दो-चार होंगे।

*(**लेखकीय परिचय :** नानू ताली राजीव गाँधी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग से परास्नातक पाठ्यक्रम पूरी कर चुकी हैं।*
मोबा: 8413997673, ई-मेल : talinanu921@gmail.com)